मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MSK–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत) (एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.एस.के.-003 : दर्शन : न्याय, वैशेषिक, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न-पत्र* ***तीन*** *खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गये निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $3 \times 10 = 30$

(क) सत्कार्यवाद की अवधारणा को विभिन्न युक्तियों के साथ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

वैशेषिक दर्शन के तत्त्वों के ऊपर एक निबन्ध लिखिए।

(ख) जैन दर्शन के प्रमाण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

चार्वाक दर्शन किस प्रकार अन्य भारतीय दर्शनों से भिन्न है, सोदाहरण समझाइए।

(ग) भारतीय दर्शन का प्रधान लक्ष्य क्या है ? वैदिक एवं अवैदिक दर्शन के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मीमांसा दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का निरूपण कीजिए।

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : $4 \times 10 = 40$

(क) नित्यसम्बन्धः समवायः। ययोर्द्वयोर्मध्ये एकमविनश्यदपराश्रिमेवावतिष्ठते तावण्युतसिद्धौ।

अथवा

सुखाद्युपलब्धिसाधनमिन्द्रियं मनः। तच्च प्रत्यात्मनित्यत्वादनन्तं परमाणुरूपं नित्यञ्च।

(ख) द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः।

स्वस्वेतरद्वितीयांशैः योजनात् पञ्च पञ्च ते॥

अथवा

प्रशान्तचित्ताय जितेन्द्रियाय प्रहीणदोषाय यथोक्तकारिणे।

गुणान्वितायानुगताय सर्वदा प्रदेयमेतत् सततं मुमुक्षवे॥

(ग) त्रिगुणमविवेकिविषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।

व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान्॥

अथवा

अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विरागमैश्वर्यम्।

सात्त्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्॥

(घ) दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।

त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि॥

अथवा

प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः।

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$5 \times 6 = 30$

(क) गुणसिद्धान्त

(ख) षट्कसम्पत्ति

(ग) जीवनमुक्त

(घ) पुरुष बहुत्व

(ङ) अभाव

(च) भावना

(छ) सामान्य

× × × × ×